

डॉ. डेव मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट लिटरेचर, व्याख्यान 18, 2 कोरिंथियन और गलाटियन

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा अपने न्यू टेस्टामेंट इतिहास और साहित्य पाठ्यक्रम में 2 कुरिन्थियों और गलाटियों पर व्याख्यान 18 था।

ठीक है, चलिए आगे बढ़ें और शुरुआत करें। आज हम जो करेंगे वह 2 कुरिन्थियों को शीघ्रता से आगे बढ़ाना है। हम इसकी पृष्ठभूमि और इसे क्यों लिखा गया, इसका मुख्य विषय इत्यादि के बारे में थोड़ी बात करेंगे।

लेकिन मैं ज्यादा विस्तार में नहीं जाऊंगा। यह उन किताबों में से एक है जहां हम काफी ऊंची यात्रा करेंगे या काफी ऊंची उड़ान भरेंगे। लेकिन गलातियों के साथ, हम फिर से नीचे उतरेंगे और गलातियों पर करीब से नज़र डालेंगे कि उस पुस्तक के साथ क्या हो रहा था, यह क्यों लिखा गया था, और कुछ ग्रंथों को थोड़ा और विस्तार से देखेंगे।

लेकिन आइए प्रार्थना के साथ शुरुआत करें, और फिर हम सवाल पूछने की कोशिश करेंगे कि कुरिन्थियों को एक और पत्र क्यों? ठीक है।

पिता, हमारे प्रति आपके प्यार के लिए और अपने लिखित शब्दों के माध्यम से इतनी दयालुता से हमारे सामने खुद को प्रकट करने के लिए धन्यवाद कि हमारे पास एक रिकॉर्ड है जो हमसे बात करता रहता है, आपके पिछले रहस्योद्घाटन का एक लिखित रिकॉर्ड लेकिन आज भी आपके लोगों के लिए जारी रहस्योद्घाटन। और मैं प्रार्थना करता हूं कि इस कक्षा के परिणामस्वरूप, हम उस रहस्योद्घाटन और आज हमारे जीवन के लिए इसके निहितार्थ के बारे में अधिक गहराई से सोचने में सक्षम होंगे। यीशु के नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं, आमीन।

ठीक है, इसलिए हमने 1 कुरिन्थियों पर कुछ विस्तार से विचार करते हुए अंतिम कक्षा की अवधि समाप्त की, लेकिन हमने यह भी सीखा कि 1 कुरिन्थियन वास्तव में केवल एक पत्र है, कम से कम हम जानते हैं, कम से कम चार में से एक पत्र जिसे पॉल ने लिखा था कोरिंथ शहर, एक ऐसा शहर जहां उन्होंने अपनी मिशनरी यात्राओं में से एक पर दौरा किया था, जिसके बारे में हम अधिनियम, अधिनियम अध्याय 18 में पढ़ते हैं। पॉल मूल रूप से लगभग डेढ़ साल तक कोरिंथ में रहे और वहां एक चर्च की स्थापना की, और फिर पॉल ने कम से कम लिखा कुरिन्थियों को चार पत्र। उनमें से दो जीवित बचे हैं जिन्हें हम 1 और 2 कोरिंथियन कहते हैं।

दूसरों का संदर्भ हमें हमारे 1 और 2 कुरिन्थियों के पत्रों में मिलता है, लेकिन अब वे हमारे पास नहीं हैं, वे हमारे पास नहीं हैं, और किसी कारण से, वे जीवित नहीं रहे हैं। लेकिन कुरिन्थियों को एक और पत्र क्यों? तो, आइए चर्च के मेल का एक और टुकड़ा निकालें, शुरुआती चर्च के मेल का और उस पत्र का जिसे हम 2 कोरिंथियन कहते हैं, जिसे हमने तकनीकी रूप से 4 कोरिंथियन

के रूप में देखा। यह पॉल का कम से कम चौथा पत्र है, जिसके बारे में हम जानते हैं, जिसे पॉल ने संभवतः कुरिन्थियों को लिखा था।

लेकिन कुरिन्थियों को एक और पत्र क्यों? खैर, सबसे पहले, 1 कुरिन्थियों के बाद, जाहिरा तौर पर कई कुरिन्थियों ने 1 कुरिन्थियों के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की। पॉल ने कुरिन्थियों को जो विभिन्न निर्देश दिए, वे सभी इस बात से संबंधित हैं कि कैसे चर्च ने धर्मनिरपेक्ष कोरिंथियन संस्कृति के मूल्यों और सोच को चर्च में घुसपैठ करने की अनुमति दी थी, विशेष रूप से वर्ग भेद और सामाजिक अभिजात्यवाद, संरक्षक-ग्राहक संबंध, आदि। इस प्रकार की सामाजिक गतिशीलता चर्च में घुस गई थी और वास्तव में कई समस्याएं पैदा हुईं जिन्हें पॉल ने 1 कुरिन्थियों की पुस्तक में संबोधित किया है।

तो जाहिर है, अधिकांश भाग के लिए, कुरिन्थियों, उनमें से अधिकांश ने उनके पत्र पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी थी। हालाँकि, इस बीच, पॉल को कुछ खबरें मिलती हैं कि एक प्रेरित के रूप में उनके अधिकार को कोरिंथियन मण्डली में कुछ उपद्रवियों द्वारा चुनौती दी गई है। इसलिए, पॉल द्वारा 1 कुरिन्थियों को लिखने के बाद, और फिर से वह शारीरिक रूप से शहर से अलग हो गया है, कुछ लोग सोचते हैं कि पॉल ने वास्तव में कोरिंथ की एक और यात्रा की थी जिसे हम अधिनियमों में इस बिंदु पर संदर्भित नहीं देखते हैं, लेकिन पॉल को खबर मिलती है कि कुछ हैं कोरिंथ शहर में चर्च में जो एक प्रेरित के रूप में उसके अधिकार को चुनौती दे रहे हैं।

और इसलिए, पॉल एक पत्र लिखता है जिसे अक्सर दर्दनाक या अश्रुपूर्ण पत्र के रूप में जाना जाता है। अध्याय 2 और पद 4 में, पौलुस कहता है, क्योंकि मैं ने बड़े संकट, और मन के संताप और बहुत आंसुओं के साथ तुम्हें लिखा है, इसलिये नहीं कि तुम्हें पीड़ा पहुंचाऊं, परन्तु इसलिये कि तुम जान लो कि मैं तुम्हारे प्रति कितना प्रेम रखता हूँ। और यदि मैं श्लोक 3, उसके ठीक पहले वाली कविता, का सहारा ले सकता हूँ, तो वे कहते हैं, वास्तव में मैं श्लोक 1 पर वापस जाऊँगा। इसलिए, मैंने अपना मन बना लिया है कि मैं आपकी एक और दर्दनाक यात्रा नहीं कराऊँगा।

तो, आप देख सकते हैं कि पॉल और कोरिंथियन मण्डली के कई लोगों के बीच तनाव है। क्योंकि यदि मैं तुम्हें दुःख पहुंचाऊं, तो उसे छोड़ कौन मुझे आनन्दित करेगा जिसे मैं ने दुःख दिया है? और मैंने वैसा ही लिखा जैसा मैंने लिखा था, इस पिछले पत्र का जिक्र करते हुए, शायद 1 कुरिन्थियों का नहीं, बल्कि एक और पत्र, मैंने वैसा ही लिखा था ताकि जब मैं आऊं, तो मुझे उन लोगों से दर्द न सहना पड़े जिनसे मुझे खुशी मिलनी चाहिए थी। क्योंकि मुझे तुम सब के विषय में भरोसा है, कि मेरा आनन्द तुम सब के लिये आनन्द होगा।

क्योंकि मैं ने बड़े संकट, मन की पीड़ा और बहुत आंसुओं के साथ तुम्हें लिखा है। कई लोग इसे इस अश्रुपूर्ण या दर्दनाक पत्र के संदर्भ के रूप में लेते हैं जिसे पॉल ने 1 कुरिन्थियों को एक नई समस्या का जवाब देने और अपने अधिकार को इस चुनौती का जवाब देने के लिए लिखने के कुछ समय बाद लिखा था। अब उस दर्दनाक पत्र के बाद, पॉल को खबर मिलती है कि कई कुरिन्थियों ने उस दर्दनाक पत्र का जवाब दिया है और उन्होंने वास्तव में पॉल के साथ जिस तरह से व्यवहार किया है, उससे पश्चाताप किया है।

और उन्होंने अब उचित प्रतिक्रिया दी है और उसी तरह से प्रतिक्रिया दी है जैसी पॉल ने इस अश्रुपूर्ण पत्र पर आशा की थी। हालाँकि, इस अच्छी खबर के साथ, पॉल को बुरी खबर भी मिलती है कि कुरिन्थ में अभी भी कुछ लोग हैं जो एक प्रेरित के रूप में उसका और उसके अधिकार का विरोध कर रहे हैं। और इसके जवाब में, पॉल फिर वह किताब लिखता है जिसे हम 2 कोरिंथियंस के रूप में जानते हैं, जो तकनीकी रूप से कम से कम 4 कोरिंथियंस है।

फिर, हम स्पष्ट रूप से कम से कम 4 पत्रों के बारे में जानते हैं जो पॉल ने लिखे हैं और हमारे 2 कोरिंथियन उन पत्रों में से 4थे हैं जिनके बारे में हम जानते हैं। लेकिन इसके जवाब में, इस तथ्य के जवाब में कि कई लोगों ने उस अश्रुपूर्ण, दर्दनाक पत्र पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है, लेकिन अभी भी कुछ लोग हैं जो एक प्रेरित के रूप में उनका और उनके अधिकार का विरोध कर रहे हैं, उन दोनों के जवाब में, पॉल अब लिखेंगे 2 कुरिन्थियों का पत्र और इस मुद्दे को संबोधित करने के लिए उसे कुरिन्थियों को भेजें। तो फिर, उम्मीद है, अब तक आप समझ गए होंगे कि नए नियम के पत्र विशुद्ध रूप से धार्मिक दस्तावेज़ नहीं हैं।

फिर, किसी भी बिंदु पर हमने पॉल को बस बैठकर एक निबंध या पाठ्यपुस्तक लिखते हुए अपनी सारी धार्मिक सोच को व्यक्त करते हुए नहीं देखा है, लेकिन पॉल के पत्र बहुत ही देहाती चिंताओं से उभरे हैं। अर्थात्, पॉल उन मुद्दों और समस्याओं से अवगत है जो इन चर्चों में उत्पन्न हुए हैं, जिसे उसने उस पुस्तक से लगाया है जिसके बारे में हम अधिनियमों में पढ़ते हैं, या यहाँ तक कि रोम शहर जैसे कुछ चर्चों में, रोमनों को लिखे पत्र में उसने ऐसा किया है। पौधा नहीं लगाता, लेकिन फिर भी समस्याओं या कठिनाइयों के बारे में सुनता है, और अब पॉल बैठता है और ये पत्र लिखता है। तो, यह धर्मशास्त्र है जो एक विशिष्ट उद्देश्य की ओर निर्देशित है, और 2 कोरिंथियंस स्पष्ट रूप से एक महत्वपूर्ण समस्या या मुद्दे को संबोधित करता है जो पहली शताब्दी के शहर कोरिंथ में उत्पन्न हुआ है।

तो फिर 2 कुरिन्थियों का उद्देश्य क्या है? पॉल ने इसे क्यों लिखा? मूल रूप से, पॉल ने 1 कुरिन्थियों को अपने पत्र का जवाब देने के लिए कुरिन्थियों की प्रशंसा करने के लिए लिखा है, यह अश्रुपूर्ण पत्र, इसलिए वह उन लोगों की प्रशंसा करने के लिए लिखता है जिन्होंने प्रतिक्रिया दी है, लेकिन वह उन लोगों को चेतावनी देने और चेतावनी देने के लिए भी लिखता है जो अभी भी विरोध कर रहे हैं उसे। संभावित अंग्रेजी अनुवाद का उपयोग करने के लिए, व्यक्तियों का एक समूह जिसे पॉल सुपर-प्रेरित कहते हैं। ये सुपर-प्रेरित पॉल को चुनौती दे रहे हैं, पॉल उन्हें उनके कार्य करने के तरीके के बारे में चेतावनी देने और चेतावनी देने के लिए लिखते हैं, और इसलिए एक प्रेरित के रूप में अपने अधिकार को फिर से स्थापित करने के लिए लिखते हैं, खासकर उन लोगों के लिए जो उनके प्रेरित होने पर सवाल उठा रहे हैं।

अब 2 कुरिन्थियों के मुद्दों में से एक यह तथ्य है कि जब आप 2 कुरिन्थियों को ध्यान से पढ़ते हैं, तो पत्र के आधे से कुछ अधिक समय में, लगभग अध्याय 10 से शुरू करते हुए, पॉल के रवैये और लहजे में अचानक बदलाव दिखाई देता है। 1-9 स्वर में काफी सकारात्मक हैं, और यहीं पर पॉल स्थापित करता है, वह एक प्रेरित के रूप में अपने अधिकार के बारे में बात करता है, वह उन्हें याद दिलाता है कि वह इस नई वाचा का मंत्री है, हमने नई वाचा के बारे में थोड़ी बात की है नए

नियम के पिछले खंडों में, और पॉल ने एक प्रेरित और नई वाचा के मंत्री के रूप में अपना अधिकार स्थापित किया है, लेकिन अध्याय 1-9 दृष्टिकोण और लहजे में बहुत सकारात्मक हैं। जब आप शेष पत्र के माध्यम से अध्याय 10 पर आते हैं, तो पॉल का स्वर बहुत अधिक नकारात्मक और कठोर हो जाता है।

और वास्तव में बीच में कोई संक्रमण नहीं है, यह सिर्फ आप पहुंचते हैं, आप अध्याय 10 तक पहुंचते हैं, ऐसा नहीं है कि अध्याय 9 के अंत में कुछ है जो आपको अध्याय 10 में कठोर, अधिक नकारात्मक स्वर के लिए तैयार करता है, यह सिर्फ एक अचानक परिवर्तन है। और इसने बहुत से विद्वानों को यह पूछने के लिए प्रेरित किया है कि हम उस परिवर्तन को कैसे समझा सकते हैं? समाधानों में से एक यह है कि 2 कोरिंथियंस वास्तव में, कम से कम उस रूप में है जैसा अब हमारे पास है जब इसे न्यू टेस्टामेंट कैनन में शामिल किया गया था, कुछ लोगों को लगता है कि 2 कोरिंथियंस वास्तव में दो अलग-अलग पत्रों का संकलन है जो पॉल ने लिखा था, क्योंकि बदलाव यह इतना अचानक है, और परिवर्तन इतना कठोर है कि निश्चित रूप से यह दो अक्षर नहीं हो सकते हैं, इसलिए कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि अध्याय 1-9 और 10-13 दो अलग-अलग अक्षर हैं जिन्हें नए नियम में आने पर जोड़ दिया गया है।, उन्हें संयोजित किया गया और उस पत्र में संपादित किया गया जिसे अब हम 2 कोरिंथियंस के रूप में जानते हैं। और संभवतः कुछ अन्य कारण भी हैं जिनके कारण लोग सोचते हैं कि ये दो अलग-अलग अक्षर हैं।

लेकिन यह एक बहुत ही सामान्य सुझाव है, कि हमारे पास जो है वह वास्तव में दो अलग-अलग अक्षर हैं। कुछ लोगों ने यह भी सुझाव दिया है कि इनमें से एक वास्तव में अश्रुपूर्ण पत्र है जिसे पॉल अध्याय 2 में संदर्भित करता है, कि अश्रुपूर्ण पत्र इस खंड में शामिल पत्रों में से एक है, शायद 10-13 में। अब, इस पर बहुत अधिक समय बर्बाद किए बिना, क्योंकि फिर से, चाहे कुछ भी हुआ हो, जिस रूप में यह हमारे पास नए नियम में है, हमें अभी भी इस तथ्य का हिसाब देना होगा कि हमारे पास यह पुस्तक है जिसे हम 2 कोरिंथियों कहते हैं वह अध्याय 1-13 है।

तो अंततः, लक्ष्य तैयार पाठ, अंतिम पाठ से निपटना है जैसा कि हमारे पास है। हालाँकि, बहुत अधिक समय खर्च किए बिना, क्या इन दोनों वर्गों के बीच स्वर में अंतर को समझने का कोई तरीका है? क्या यह इस बात का सूचक है कि ये दो अलग-अलग अक्षर हैं? या क्या आप अध्याय 1-9 और अध्याय 10-13 के बीच के अंतर को समझने का कोई और तरीका सोच सकते हैं, बिना यह बताए कि हमारे पास जो कुछ है वह दो अलग-अलग पत्र हैं जो पॉल ने अलग-अलग अवसरों पर लिखे थे, और बाद में, एक मुंशी या कोई उन्हें लाया था एक साथ जैसे ही इसने नए नियम में अपनी जगह बनाई और इसे इस अच्छे अक्षर के रूप में एक साथ रखा जिसे हम 2 कोरिंथियंस कहते हैं। क्या पहले नौ अध्यायों और अध्याय 10-13 के बीच परिप्रेक्ष्य और स्वर में अचानक बदलाव का कोई और तरीका है जो अधिक नकारात्मक हैं? हो सकता है कि पॉल की रात कठिन रही हो और उसने अध्याय 1-9 पूरा कर लिया हो, अच्छी नींद नहीं आई हो और चिड़चिड़ा हो गया हो, और उठकर 10-13 लिखा हो।

क्या आपको वह पसंद नहीं आया? अंतर का कारण क्या हो सकता है? उस पृष्ठभूमि के बारे में सोच रहे हैं जिसके बारे में हमने अभी बात की है। यह संभव है, आप बिल्कुल सही हैं, यह संभव है कि सबसे पहले, हमें शायद इस संदर्भ में सोचने की ज़रूरत नहीं है, हालाँकि यह मामला हो

सकता है, लेकिन क्या पॉल को बैठकर पूरी बात एक साथ लिखनी होगी शुरू से अंत तक बैठे रहे? मैं नहीं जानता, शायद पहली सदी में उन्होंने इसी तरह पत्र लिखे होंगे। या क्या उसने इसमें से कुछ लिखा होगा और नई जानकारी प्राप्त की होगी जिसके कारण उसे शेष पत्र लिखना पड़ा, जो कि उसे प्राप्त कुछ जानकारी के आलोक में अधिक नकारात्मक है?

यह पूरी तरह संभव है. आप सोचेंगे कि, विशेष रूप से 1 कुरिन्थियों के प्रकाश में जहां वह संकेत देता है, अब मैं आपको वही लिखता हूं जो मुझे लिखा गया था। आप उम्मीद कर सकते हैं कि अध्याय 10 की शुरुआत किसी संकेत के साथ होगी कि उसे अतिरिक्त समाचार प्राप्त हुआ होगा।

हालाँकि यह प्रशंसनीय है, उसे अतिरिक्त जानकारी प्राप्त हो सकती थी। यह मानते हुए कि उनके पाठकों को पता था कि क्या हो रहा है, उनका स्वर बदल गया होगा। क्या हम इसे अध्याय 1-9 के दृष्टिकोण से भी नहीं देख सकते, क्या पॉल विशेष रूप से उन लोगों को संबोधित कर रहा है जिन्होंने अनुकूल प्रतिक्रिया दी है, जबकि अध्याय 10-13 में, पॉल कोरिंथ के उसी खंड को संबोधित करता है जो अभी भी उसका विरोध कर रहा है और उसे चुनौती दे रहा है अधिकार।

और इसलिए, उनका लहजा उन लोगों के प्रति और अधिक कठोर और नकारात्मक हो जाता है जो अभी भी उनके विरोधी हैं। इसलिए स्वर में परिवर्तन दो अलग-अलग अक्षरों को नहीं, बल्कि कोरिंथ के चर्च में दो अलग-अलग समूहों को प्रतिबिंबित कर सकता है। एक बार फिर एक ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है कि वह प्रशंसा करता है, और दूसरा अभी भी उसका विरोध कर रहा है और उसके अधिकार को चुनौती दे रहा है, जहां तब पॉल अधिक कठोर और नकारात्मक स्वर में हो जाता है।

इसलिए मुझे नहीं लगता कि स्वर में परिवर्तन हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करेगा कि दो अलग-अलग पत्र हैं जिन्हें एक बाद के लेखक ने संपादित किया और एक साथ लाया, लेकिन फिर से वे कोरिंथियन चर्च के दो अलग-अलग खंडों और पॉल के प्रति उनके दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित कर सकते हैं। . पाठों में से एक, पहले खंड के अंत में बहुत संक्षेप में कुछ कहने के लिए जो स्वर में अधिक सकारात्मक है, 1 कुरिन्थियों के अध्याय 8-9 में, मुझे खेद है, 2 कुरिन्थियों, पॉल एक लंबे खंड में, मैं वास्तव में, सबसे लंबा खंड जो हमारे पास देने के विषय पर है या हममें से कुछ लोग दशमांश शब्द का उपयोग करेंगे, पॉल मूल रूप से कुरिन्थियों को प्रोत्साहित करता है क्योंकि वह एक संग्रह लेना चाहता है जिसे पॉल यरूशलेम वापस ले जाएगा। इसलिए पॉल को उम्मीद है कि जब वह कुरिन्थ पहुंचेगा तो वह इकट्ठा करने में सक्षम होगा, कि कुरिन्थियों ने एक भेंट या संग्रह लिया होगा और वह उसे वापस यरूशलेम में, यरूशलेम में चर्च में ले जाएगा, जो ऐतिहासिक रूप से यरूशलेम में चर्च अक्सर होता है पहली शताब्दी के दौरान अकाल और उस जैसी चीजों का सामना करना पड़ा, और शायद तब यह यरूशलेम शहर में अकाल राहत, यरूशलेम में चर्च और ईसाइयों की सहायता के लिए कोरिंथियन चर्च से समर्थन इकट्ठा करने का पॉल का प्रयास है।

अब कुछ प्रश्न, या शायद एक प्रश्न और अवलोकन, सबसे पहले, और उनमें से एक व्यावहारिक धार्मिक प्रकार का अवलोकन है, लेकिन सबसे पहले, एक प्रश्न, आपको क्यों लगता है कि पॉल

कोरिंथियन ईसाइयों को लाने के लिए उत्सुक होगा एक भेंट उठाओ ताकि वह उसे यरूशलेम को वापस भेज सके? मेरा मतलब यह है कि, मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि केवल एक ही कारण है, बल्कि नए नियम के समय और उससे पहले के इतिहास के संबंध में हमने जिन कुछ चीजों के बारे में बात की है, उनमें से कुछ के बारे में धार्मिक रूप से सोच रहा हूँ। जो चीजें हमने गॉस्पेल और पॉल के अन्य पत्रों में देखी हैं, क्या पॉल कोरिंथियन चर्च को एक संग्रह, एक भेंट लेने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए उत्सुक हो सकता है, जिसे वह फिर कोरिंथियन चर्च को भेजेगा? केवल अच्छे मानवतावादी होने और उन लोगों के लिए करुणा और चिंता दिखाने के अलावा जो पीड़ित हैं और जिन्हें ज़रूरत है, जब उनके पास शायद संसाधन हों या भले ही उनके पास संसाधन न हों, पॉल उन्हें तैयार रहने के लिए कहता है, कि उन्होंने अपना योगदान दिया है उनकी गरीबी, लेकिन पॉल उनसे एक संग्रह लेने के लिए इतना इच्छुक क्यों होगा ताकि वह उसे यरूशलेम चर्च, यरूशलेम में ईसाइयों को वापस ले जा सके? यदि जेरूसलम चर्च मुख्य रूप से यहूदी है और कोरिंथियन चर्च अधिक गैर-यहूदी है, तो यह पॉल के लिए यहूदी और गैर-यहूदी के बीच एकजुटता स्थापित करने का एक और तरीका होगा, एक गैर-यहूदी चर्च अब यरूशलेम में चर्च का समर्थन करेगा। इसलिए, यह यहूदियों और अन्यजातियों के बीच एकता की पॉल की अंतर्निहित चिंता का अधिक व्यावहारिक प्रकटीकरण हो सकता है। और इसलिए, गैर-यहूदी चर्च से अब एक संग्रह लेने के लिए जिसे वह अब यरूशलेम चर्च को वापस भेज देगा, उम्मीद है कि इससे यहूदी और गैर-यहूदी के बीच एकजुटता में फिर से व्यावहारिक रूप से मदद मिलेगी, जिसे बनाए रखने के लिए पॉल ने बहुत संघर्ष किया है। सुसमाचार अन्यजातियों के साथ-साथ यहूदियों तक भी जाता है, कि अब ईश्वर की सच्ची प्रजा एक है।

और हम उस विषय को गलाटियन्स और कई अन्य स्थानों पर भी उभरता हुआ देखेंगे। हां? सही सही। हाँ, ऐसा भी हो सकता है।

यह विचार बहुत अच्छी तरह से हो सकता है कि यह अन्यजातियों के लिए भी एक आह्वान है कि वे सुसमाचार में अपनी भागीदारी की वास्तविक जड़ों को पहचानें, यह महसूस करें कि आप पर कुछ बकाया है, ऐसा नहीं है कि वे किसी भी चीज़ के लिए भुगतान कर रहे हैं, लेकिन एक तरह से यह एक मान्यता है कि, जैसा कि पॉल अन्यत्र कहेगा, अन्यजातियों को इस्राएल के राष्ट्रमंडल से अलग कर दिया गया था, वे अजनबी और विदेशी और परदेशी थे, लेकिन अब उन्हें उन वादों और अनुबंधों में हिस्सा दिया गया है जो इज़राइल से किए गए हैं। शायद यह उन्हें याद दिलाने और उनके पास मौजूद मुक्ति के लिए यहूदी पृष्ठभूमि के प्रति आभार व्यक्त करने का एक तरीका है। यह बहुत अच्छी बात है।

इस पाठ के बारे में दूसरी दिलचस्प बात यह है कि, यह फिर से एक व्यावहारिक धर्मशास्त्रीय मामला है जिसके बारे में सोचना कम से कम दिलचस्प है, खासकर जब आप इसकी तुलना पुराने नियम से करते हैं, तो यह दिलचस्प है कि नए नियम में देने का सबसे विस्तारित उपचार है कम से कम दशमांश देने के बारे में कुछ भी उल्लेख नहीं करता है। वास्तव में, जब आप 2 कुरिंथियों 8 से 9 तक ध्यान से पढ़ते हैं, तो पॉल कभी भी, और जैसा कि मैं न्यू टेस्टामेंट को समझता हूँ, कभी भी हमें 10% दशमांश देने के लिए नहीं कहता है। इसके बजाय, पॉल यह स्पष्ट करता है कि हमारे देने का माप उदारता और यीशु मसीह के प्रति कृतज्ञता है।

वास्तव में, मैं आज भी आश्चर्य हूँ कि यह, और हम सभी ने शायद यह सुना है और मैं अब भी सुनता हूँ, लेकिन 10%, यह कहना कि आपको अपनी आय का 10% देना होगा, कुछ लोगों के लिए बिल्कुल अनुचित है। दूसरों के लिए यह आपराधिक है। वे आसानी से छूट रहे हैं।

10%, उन्हें शायद 30 या 40% देना चाहिए। लेकिन पॉल कभी भी दशमांश देने के संदर्भ में बात नहीं करता है। इसके बजाय, 2 कुरिन्थियों 8 से 9 तक यह स्पष्ट है कि पॉल यीशु मसीह और उसने आपको जो दिया है उसके प्रति कृतज्ञता और प्रेम के कारण जितना हो सके उतनी उदारता से देने की बात करता है।

इसलिए, जब हम देने के बारे में सोचते हैं तो मेरा सुझाव यह है कि प्राथमिक कारक यह नहीं है कि आप जो कमाते हैं या कमाते हैं उसका 10% गणना करें, बल्कि यह पूछें कि मैं कैसे कर सकता हूँ, सबसे उदार राशि क्या है, मैं यथासंभव उदार कैसे हो सकता हूँ मैं क्या देता हूँ? आगे बढ़ने से पहले 2 कुरिन्थियों के बारे में एक और बात कहनी है, और मैं केवल वही बताऊंगा जो मुझे लगता है कि शायद पुस्तक का मुख्य विषय है, या मुख्य विषयों में से एक, शुरू से अंत तक 2 कुरिन्थियन हैं, यह है बहुत दिलचस्प है, खासकर जब पॉल इन सुपर प्रेरितों या उन लोगों से लड़ रहा है जो उसके विरोध में हैं, तो यह दिलचस्प है कि पॉल की प्रेरितता की वैधता का प्राथमिक संकेत या संकेत हमेशा उसकी पीड़ा है। यह दिलचस्प है कि जब वह अपने प्रेरितिक अधिकार की वास्तविकता या वैधता की ओर इशारा करता है, तो वह अपने भाषण कौशल या किसी और पर शक्ति का इस्तेमाल करने की क्षमता की ओर इशारा नहीं करता है, बल्कि इसके बजाय वह हमेशा दिलचस्प तरीके से अपनी पीड़ा की ओर इशारा करता है। इसलिए, कुरिन्थियों की पुस्तक में, पीड़ा को, कम से कम पॉल के साथ, उसकी कमजोरी या इन सुपर-प्रेरितों के प्रति उसकी अधीनता के संकेत के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

वास्तव में, जाहिरा तौर पर ये सुपर-प्रेरित यही कर रहे थे। वे पॉल की कमजोरियों को एक संकेत के रूप में इंगित कर रहे थे कि वह वास्तव में एक प्रेरित नहीं था, लेकिन पॉल यह स्पष्ट करता है कि उसकी पीड़ा वास्तव में उसके प्रेरित होने की वैधता का संकेत है। उदाहरण के लिए, अध्याय 12 में पत्र के अंत में, और यह दिलचस्प है कि वह कैसे लिखता है, अध्याय के बिल्कुल अंत में वह कहता है, और आप सुन सकते हैं कि पॉल एक तरह से लगभग विडंबनापूर्ण है, वह इन सुपर-प्रेरितों को बता रहा है, जो लोग उसका विरोध कर रहे हैं और अपनी साख के बारे में घमंड कर रहे हैं और पॉल को नीचा दिखा रहे हैं क्योंकि उसके पास साख की कमी है और उसके पास भाषण और प्रस्तुति की शक्ति का अभाव है, जैसा कि पॉल कहते हैं, घमंड करना आवश्यक है।

इससे कुछ हासिल नहीं होगा, लेकिन मैं प्रभु से दर्शन और रहस्योद्घाटन की ओर बढ़ूंगा। तो, पॉल एक तरह से कहता है, मैं घमंड नहीं करना चाहता, लेकिन अगर मैं घमंड करने जा रहा हूँ, और आप मुझे मजबूर करते हैं, तो मैं प्रमाण पत्र भी दे सकता हूँ। और वह कहता है कि मैं उन दर्शनों और रहस्योद्घाटनों में जा सकता हूँ जो मुझे मिले हैं।

वह कहता है, मैं मसीह में एक व्यक्ति को जानता हूँ जो चौदह वर्ष पहले तीसरे स्वर्ग पर उठा लिया गया था, चाहे शरीर के साथ या शरीर के बाहर, मैं नहीं जानता, ईश्वर जानता है। और मैं

जानता हूँ कि ऐसा कोई व्यक्ति, चाहे शरीर में हो या शरीर के बाहर, मैं नहीं जानता, भगवान जानता है। यह दिलचस्प है कि वह इसे दो बार दोहराता है।

यह व्यक्ति स्वर्ग में, स्वर्ग में उठा लिया गया था, और उसने ऐसी बातें सुनीं जो बताई नहीं जा सकतीं, जिन्हें किसी भी इंसान को दोहराने की अनुमति नहीं है। दूसरे शब्दों में, पॉल के पास एक दूरदर्शी प्रकार का अनुभव है जिसके बारे में आपने पुराने टेस्टामेंट में डैनियल और नए टेस्टामेंट में रहस्योद्घाटन की पुस्तक में पढ़ा है जिसे हम बाद में देखेंगे, जिसे हम बाद में देखेंगे। सेमेस्टर परन्तु पौलुस आगे कहता है, ऐसे मनुष्य के लिये तो मैं घमण्ड करूंगा, परन्तु अपनी ओर से, अपनी निर्बलताओं को छोड़ किसी विषय में घमण्ड नहीं करूंगा।

और तब वह आगे कहता है, कि परमेश्वर ने उसे घमण्ड करने से बचाने के लिये उसके शरीर में एक कांटा चुभाया। और यह किसी प्रकार की बाधा या किसी चीज़ का एक रूपक है जिसने पॉल को कुछ सीमाओं का दावा करने से रोक दिया। इस बात पर सभी प्रकार की असहमति रही है कि यह भौतिक था या आध्यात्मिक था।

कुछ लोगों ने इसे पॉल की नज़र खराब होने से जोड़ने की कोशिश की है। क्या उसे कोई बीमारी या बोलने की समस्या थी या यह कोई शारीरिक पीड़ा थी? पाठ हमें नहीं बताता। लेकिन यह पद 8 में क्या कहता है, पॉल कहते हैं, मैंने इस बारे में प्रभु से तीन बार अपील की कि इस बाधा को हटा दें, चाहे वह शारीरिक या आध्यात्मिक रूप से कुछ भी हो, लेकिन प्रभु ने मुझसे कहा, मेरी कृपा तुम्हारे लिए काफी है शक्ति आपकी कमजोरी में परिपूर्ण बनती है।

पौलुस कहता है, इसलिये मैं और भी अधिक आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा, कि मसीह की शक्ति मुझ में वास करे। इसलिए, मैं मसीह के लिए कमजोरियों, अपमानों, कठिनाइयों, उत्पीड़नों और विपत्तियों से संतुष्ट हूँ। क्योंकि जब भी मैं निर्बल होता हूँ, तब तब मैं बलवन्त होता हूँ।

तो, पौलुस द्वारा अपने प्रेरितत्व के प्रमाण के रूप में अपनी कमजोरी की ओर इशारा करने के जवाब का एक हिस्सा यह है कि वह आश्चर्य है कि यह उसकी कमजोरी के माध्यम से है कि भगवान की शक्ति सबसे अधिक प्रकट और स्पष्ट होती है। इसलिए, उसकी कमजोरी को देखते हुए, कोई अन्य विकल्प या कोई अन्य निष्कर्ष नहीं हो सकता है कि यह ईश्वर की शक्ति है जो उसके माध्यम से काम कर रही है, न कि उसकी अपनी शक्ति और न ही उसकी अपनी क्षमता। इसलिए कमजोरी और पीड़ा एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, 2 कुरिन्थियों में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका, विशेष रूप से इन झूठे सुपर प्रेरितों के खिलाफ पॉल की प्रेरिताई के लिए एक प्रमाण पत्र के रूप में जो उसके अधिकार को चुनौती दे रहे हैं।

तो, विषय क्या है? यदि मैं 2 कुरिन्थियों के विषय को संक्षेप में प्रस्तुत कर सकूँ, तो कम से कम एक प्रमुख विषय पीड़ा के माध्यम से महिमा होगा। उन छंदों की तरफ पर जिन्हें हमने अभी पढ़ा, ईश्वर की शक्ति, ईश्वर की महिमा प्रेरित पॉल की पीड़ा के माध्यम से प्रकट होती है। इसके बावजूद या इसके अतिरिक्त नहीं, बल्कि इसके माध्यम से और इसमें।

ठीक है, 2 कुरिन्थियों पर कोई प्रश्न? मुख्य रूप से मैं चाहता हूँ कि आप यह समझें कि इसका मुख्य उद्देश्य उन लोगों की प्रशंसा करना है जिन्होंने पॉल के पत्र और उसके आदेशों और उसके प्रेरितत्व का जवाब दिया, लेकिन उन लोगों को चेतावनी देना और चेतावनी देना है जो अभी भी उसका विरोध करते हैं। और पॉल अपनी पीड़ा और कमजोरी की ओर इशारा करके ऐसा करता है क्योंकि यह उसकी पीड़ा और कमजोरी के माध्यम से है कि भगवान की महिमा और शक्ति सबसे अधिक स्पष्ट है। तो फिर एक परीक्षा में, आप 2 कुरिन्थियों के बारे में जो कुछ भी मैं आपके सामने रखूंगा, उसका उत्तर देने में सक्षम होंगे, कुछ भी जिसके बारे में हमने आज चर्चा में बात की है।

ठीक है, मैंने आपको बताया था कि हम 2 कुरिन्थियों के माध्यम से जल्दी से आगे बढ़ेंगे, लेकिन आइए प्रारंभिक चर्च के मेल का एक और टुकड़ा खोलें और वह यह है कि हम मेलबॉक्स में पहुंचेंगे और एक पत्र निकालेंगे जो गलाटियन्स को संबोधित है। अब एक प्रश्न यह उठता है कि आप पत्र कहाँ ले जायेंगे? यदि आप पहली शताब्दी के मेल वाहक थे, और उम्मीद है कि आपने अपनी पाठ्यपुस्तक इंट्रोड्यूसिंग द न्यू टेस्टामेंट को पढ़ते समय इसे पढ़ा होगा, यदि आप पहली शताब्दी में एक मेल वाहक थे और पॉल ने आपको एक पत्र दिया था और कहा था, यहाँ, इसे ले लो गलातियों के लिए, आप दुनिया में कहाँ जायेंगे? क्योंकि आपको जल्द ही पता चल जाएगा कि गैलाटिया नाम का कोई शहर नहीं है। हमने रोम को देखा है।

रोम एक शहर था और कोरिंथ एक शहर था, लेकिन हम गलाटियन्स के पास पहुँचते हैं और आप मानचित्र पर देखते हैं और वहाँ गलातिया नाम का कोई शहर नहीं है। लेकिन बहस यहीं है। सामान्य शब्दों में कहें तो गैलाटिया वास्तव में एक क्षेत्र या एक देश था।

लेकिन यह कहाँ स्थित है? मेरा मतलब है, पॉल, फिर से, यदि आप पहली सदी के डाक वाहक होते, तो आप गलातियों को पत्र कहाँ ले जाते? पॉल किसे संबोधित कर रहा था? क्योंकि फिर से, जब आप वापस जाते हैं और प्रेरितों के काम की पुस्तक पढ़ते हैं, तो आपको चर्च या ऐसा कुछ भी स्थापित करने के लिए पॉल द्वारा गलातियों के पास जाने का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। तो गैलाटिया कहाँ थी? गलातिया में चर्च या चर्च स्थापित करने के लिए पॉल कहाँ गया होगा? आपने यह पत्र कहाँ लिया होगा? पौलुस द्वारा लिखे गए इस पत्र का उद्देश्य क्या था? क्योंकि वह पहली कविता में शुरू करता है, जैसा कि वह अपने सभी पत्रों में करता है, वह आमतौर पर खुद को पहचानता है और फिर प्राप्तकर्ताओं का उल्लेख करता है। यह पहली शताब्दी में पत्र खोलने का सामान्य तरीका था, जैसा कि हम कहते हैं, प्रिय फलाना, और फिर हम इसे अपने शरीर में प्रविष्ट कर देते हैं।

प्रथम शताब्दी में प्रिय अमुक के स्थान पर पत्र के लेखक ने अपना परिचय दिया होगा तथा अपना तथा प्राप्तकर्ता का भी परिचय दिया होगा। तो पॉल शुरू होता है, पॉल, एक प्रेरित जो न तो मानव आयोग द्वारा और न ही मानव अधिकारियों से भेजा गया था, बल्कि यीशु मसीह और ईश्वर, पिता के माध्यम से भेजा गया था, जिसने उसे मृतकों में से गलाटिया के चर्चों में उठाया था। तो गलातिया के चर्च कहाँ थे? खैर, यह एक नक्शा है, फिर से, आपने इसे पहले देखा है, एक नक्शा जो अधिनियम की पुस्तक में पॉल की मिशनरी यात्राओं और उसकी अंतिम यात्रा को रेखांकित करता है जो वह अधिनियम अध्याय 28 में रोम के लिए करता है।

और आप देखते हैं, आप इसे पढ़ नहीं सकते हैं, यह थोड़ा विकृत है, लेकिन आप स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि इस मानचित्र में उन अधिकांश शहरों के नाम हैं जहां पॉल ने पूरे अधिनियमों के दौरान अपनी मिशनरी यात्राओं में दौरा किया था। अब, आप देखेंगे कि शायद आप इसे नहीं देख सकते हैं, लेकिन गैलाटिया यहीं कहती है। और यह एक तरह से भ्रमित करने वाला है कि इसे कहाँ रखा गया है क्योंकि यह वास्तव में विशिष्ट नहीं है।

गैलाटिया कहाँ है? क्या पॉल... आप देखेंगे, यहाँ गैलाटिया है, लेकिन पॉल की किसी भी यात्रा में वह वास्तव में इस क्षेत्र में नहीं आया, कम से कम जिसके बारे में हम अधिनियम की पुस्तक में जानते हैं। पॉल की अधिकांश गतिविधियाँ, यह आधुनिक तुर्की और उस समय एशिया माइनर है, पॉल की अधिकांश गतिविधियाँ दक्षिणी भाग, आधुनिक तुर्की या एशिया माइनर का दक्षिणी भाग रही हैं। तो, क्या पॉल उन लोगों को संबोधित कर रहा है जिनसे वह दोबारा कभी नहीं मिला, या क्या हो रहा है? गैलाटिया कहाँ है? पॉल ने यह पत्र कहाँ भेजा? वास्तव में दो सिद्धांत हैं जिनके बारे में आशा है कि आपने अपनी पाठ्यपुस्तक में पढ़ा होगा और याद किया होगा।

उनमें से एक को उत्तरी गैलाटिया सिद्धांत के रूप में जाना जाता है। यानी मूल रूप से, गलाटिया नाम जातीय गलाटियन को संदर्भित करता था, जो मध्य तुर्की या एशिया माइनर के उत्तरी भाग में इस क्षेत्र में थे। यह गॉल्स द्वारा बसाया गया स्थान रहा होगा और बाद में गलाटिया के नाम से जाना गया।

इसे उत्तरी गलाटियन सिद्धांत के रूप में जाना जाता है। और इसलिए, कुछ लोग सोचते हैं कि जब पॉल ने गलातियों को एक पत्र लिखा, तो वह जातीय क्षेत्र, गलातिया के जातीय क्षेत्र को संबोधित कर रहा था। हालाँकि एक्ट्स हमें यह नहीं बताता कि वह कभी वहाँ गया था, कुछ लोग तो यह भी कहेंगे, ठीक है, शायद एक्ट्स हमें यह नहीं बताता कि पॉल हर जगह गया था।

हो सकता है कि इनमें से किसी एक यात्रा में, वह मध्य तुर्की के उत्तरी भाग में पहुँचे, जो गलाटिया के नाम से जाना जाता है। और कभी-कभी उन्होंने वहाँ का दौरा किया होगा और चर्चों की स्थापना की होगी। और अब वह गलातियों को एक पत्र लिख रहा है।

तो उत्तरी गैलाटिया सिद्धांत का यही मतलब है। कि जब पॉल गलातियों से कहता है, तो वह जातीय गलातियों को, वास्तविक उत्तरी देश गलातिया को लिख रहा है। हालाँकि, एक और सिद्धांत है जिसे साउथ गैलाटियन सिद्धांत कहा जाता है।

और पहली शताब्दी के समय तक जब रोम ने कब्ज़ा कर लिया, रोम ने वास्तव में गैलाटिया को अपने प्रांतों में से एक के रूप में स्थापित किया। यदि आपको याद हो, जैसे ही रोमन साम्राज्य ने सत्ता संभाली, उसने अपने क्षेत्र पर शासन करने का एक तरीका इसे प्रांतों में विभाजित करना था। उन प्रांतों में से एक गलातिया था।

और दिलचस्प बात यह है कि गैलाटिया का रोमन प्रांत दक्षिण में भूमध्य सागर तक फैला हुआ था। तो सबसे अधिक संभावना है, इस दृष्टिकोण के तहत, दक्षिण गलाटियन दृष्टिकोण, पॉल

शहरों की एक श्रृंखला को संबोधित कर रहा है, लिस्ट्रा और डर्बे, शहरों की एक श्रृंखला जो दक्षिण गलाटिया में थी। वह गलातिया प्रांत है।

तो, क्या आपको अंतर दिखता है? उत्तरी गैलाटिया का कहना है कि गलाटिया केवल उत्तरी, मूल रूप से, गलाटिया देश को संदर्भित करता है। जातीय रूप से, गलाटियन लोग मध्य तुर्की के उत्तरी भाग में रहते थे। लेकिन रोमन साम्राज्य के समय तक, रोम ने इसे एक प्रांत में बदल दिया और गैलाटिया को दक्षिणी तुर्की, आधुनिक तुर्की तक फैला दिया, जिसमें कई शहर शामिल होंगे जहां पॉल ने एक से अधिक अवसरों पर दौरा किया था।

तो फिर, मैं इस बारे में विस्तार से नहीं जाना चाहता कि क्यों, मुझे लगता है, या हमें किसको पकड़ना चाहिए और क्यों, लेकिन अब ऐसा लगता है कि, मुझे लगता है, लगभग हर कोई इस बात से सहमत है कि पॉल शायद यहां दक्षिण में इन शहरों को संबोधित कर रहे थे गैलाटिया। यानी गलाटिया का तात्पर्य जातीय देश से नहीं, बल्कि रोमन प्रांत से है। इसलिए, फिर से, सबसे अधिक संभावना है कि पॉल चर्चों या शहरों के एक समूह को संबोधित कर रहा है, जहां उसने दक्षिण गलाटिया में अपनी मिशनरी यात्राओं के दौरान दौरा किया था, जो कि गलाटिया के रोमन प्रांत का दक्षिणी भाग है।

अब आप आज रात सो सकते हैं, आप जानते हैं कि पॉल ने कहाँ संबोधित किया था, यह सही है, आपने इसे अभी समझ लिया है, उत्तर, आप जानते हैं कि यह दक्षिण गैलाटिया है। फिर, ऐसा नहीं है, आप जानते हैं, ऐसा नहीं है कि आप उनके पत्र को पूरी तरह से अलग तरीके से पढ़ेंगे, लेकिन जब हम सवाल पूछ रहे होते हैं तो इससे मदद मिलती है, खैर यह अधिनियमों से कैसे जुड़ता है? क्योंकि, फिर से, हम पॉल को गलाटिया के जातीय क्षेत्र, गलाटिया के आसपास के उत्तरी क्षेत्र तक जाते नहीं देखते हैं, लेकिन हम पॉल को दक्षिणी तुर्की में देखते हैं, जो उस समय के दौरान गलाटिया के रोमन प्रांत के रूप में जाना जाता था, इसलिए सबसे अधिक संभावना है पॉल उसी को संबोधित कर रहा है। इसलिए, मैं सोचता हूँ कि यदि आप पॉल के डाक वाहक होते और वह आपको पत्र सौंपता और कहता, यहां, इसे गलातियों के पास ले जाओ, तो आप यहीं शहरों के इस समूह की यात्रा करते और उन्हें यह पत्र सौंप देते।

वह गलाटियन थे। दूसरा प्रश्न, फिर से, यह नहीं है कि आप गलाटियन्स की व्याख्या करने के तरीके में कोई बड़ा अंतर नहीं डालेंगे, लेकिन इसका संबंध इस बात से है कि आप गलाटियन्स को अधिनियमों से कैसे जोड़ते हैं, क्या आपको लगता है कि यह फिट बैठता है या यह विरोधाभासी है या हम कैसे फिट बैठते हैं गलातियों, प्रेरितों के काम की पुस्तक से हम पौलुस के बारे में क्या जानते हैं? और वह यह है कि गलाटियन्स कब लिखा गया था? क्या यह जल्दी था या देर से? खैर, यह अच्छा दुःख है। किसकी तुलना में जल्दी या देर से? आरंभ से मेरा तात्पर्य यह है कि यदि गैलाटियन्स को अधिकांश विद्वानों द्वारा लिखी गई तारीख से भी पहले की तारीख के अनुसार जल्दी लिखा गया था, तो यह संभवतः पॉल द्वारा लिखा गया पहला पत्र होगा जो हमारे पास है, जिसके बारे में हम जानते हैं, कि हमारे पास कब्ज़ा है।

याद रखें, पॉल के नए नियम के पत्र उस क्रम में व्यवस्थित नहीं हैं जिस क्रम में वे लिखे गए हैं। वे मोटे तौर पर लंबाई के क्रम में व्यवस्थित हैं। इसीलिए रोमन सबसे पहले आता है।

लेकिन अगर हम गैलाटियंस को जल्दी डेट करते हैं, तो मूल रूप से, मैं इसे बस एक पल में बता दूंगा। यदि हम इसकी प्रारंभिक तिथि बताएं, तो मूल रूप से हम कह रहे हैं कि गैलाटियन्स संभवतः पॉल द्वारा लिखा गया पहला पत्र है, कम से कम हमारे पास इसका रिकॉर्ड है। यदि हम इसे देर से दिनांकित करते हैं, तो संभवतः 1 थिस्सलुनीकियों का पहला पत्र होगा, या शायद पॉल द्वारा लिखा गया पहला पत्र होगा।

और गलाटियन थोड़े समय बाद आये, उनके 1 थिस्सलुनीकियों को लिखने के कुछ वर्षों बाद। फिर, मैं ईस्वी सन् के वर्ष के संबंध में सटीक तारीख के बारे में इस बिंदु का उत्तर नहीं दे रहा हूं, लेकिन मुख्य बात जो मैं आपको बताना चाहता हूं वह यह है कि यदि आप इसे पहले से दिनांकित करते हैं, तो गैलाटियन पहला अक्षर है, कम से कम हम इसके बारे में जानते हैं, शायद वह पॉल ने लिखा था। यदि आप इसे बाद की तारीख देंगे, तो सबसे अधिक संभावना 1 थिस्सलुनिकियों की होगी।

1 थिस्सलुनिकियों का नाम अगली पंक्ति में है, और यह पॉल द्वारा लिखे गए पहले पत्र के रूप में सूची के शीर्ष पर पहुंच जाएगा। अब, हम इस प्रश्न का उत्तर कैसे देते हैं, क्या यह पॉल द्वारा लिखा गया पहला पत्र है या क्या यह दूसरा पत्र है, यह अधिनियमों से कैसे संबंधित है। और मुख्य कारक अधिनियम अध्याय 15 है, जो क्या दर्ज करता है? बहुत अच्छा, जेरूसलम काउंसिल।

जेरूसलम परिषद को याद करें जहां पॉल और अन्य प्रेरित एकत्र हुए और उन्होंने इस मुद्दे को संबोधित किया कि ईश्वर के लोग होने के लिए अन्यजातियों से क्या आवश्यक है? क्या उन्हें मूसा की व्यवस्था के अधीन रहना होगा? और सर्वसम्मति थी, नहीं, वे ऐसा नहीं करते। इसलिए अन्यजाति पुराने नियम के मोज़ेक कानून के अधीन हुए बिना यहूदियों के साथ-साथ परमेश्वर के लोग हो सकते हैं। अधिनियम 15 में यही हुआ।

सवाल यह है कि गलाटियन्स का उससे क्या संबंध है? क्योंकि गैलाटियन्स में, इन्हें पंक्तिबद्ध करना आवश्यक नहीं है। मैं बस इसे सूचीबद्ध कर रहा हूं, और आप एक पल में समझ जाएंगे कि क्यों। गलातियों 1 और 2 में, हम पढ़ते हैं, गलातियों 1 और 2 में, पॉल एक तरह से हमें अपने जीवन का सारांश देता है, उस समय से, एक यहूदी के रूप में उसके जीवन का।

याद रखें वह एक फरीसी था। हमने प्रेरितों के काम अध्याय 9 में देखा, कि पॉल एक फरीसी, एक प्रकार का उत्साही व्यक्ति था। वह पहली सदी के आतंकवादी की तरह था, जो कानून और यहूदी धर्म के प्रति अपने उत्साह के कारण चर्च को नष्ट करने की कोशिश कर रहा था।

लेकिन फिर जब मसीह ने दमिश्क की सड़क पर उसका सामना किया, तो पॉल परिवर्तित हो गया और उसे एक प्रेरित भी कहा गया। पॉल ने गलाटियंस के अध्याय 1 और 2 में अपने जीवन का सारांश दिया है, और इन अध्यायों में, पॉल यरूशलेम की दो यात्राओं का उल्लेख करता है। यरूशलेम की एक यात्रा उनके धर्म परिवर्तन के बहुत समय बाद नहीं हुई।

दमिश्क मार्ग पर जा रहा था, जब परमेश्वर ने उसे नीचे गिरा दिया और मसीह उसके सामने प्रकट हुए। उसके कुछ ही समय बाद, पॉल यरूशलेम का दौरा करता है। लेकिन फिर बाद में गलातियों 2 में, पॉल ने यरूशलेम की अपनी एक और यात्रा का उल्लेख किया।

इसलिए, पॉल यरूशलेम की दो यात्राओं का उल्लेख करता है। अपने रूपांतरण के बीच और उस समय जब वह गलाटियन्स लिख रहा है, पॉल का कहना है कि वह दो बार यरूशलेम का दौरा कर चुका है। अधिनियम, अधिनियम के पहले 15 अध्याय, अध्याय 9 से शुरू होकर, पॉल के रूपांतरण के साथ, अधिनियम 9-15 में पॉल की यरूशलेम की तीन यात्राओं का उल्लेख है।

पहला, अधिनियम 9-10 में, स्पष्ट रूप से वही है जिसका वह गलातियों 1 में उल्लेख कर रहा है। तो वह समस्या हल हो गई है। पुनः, पॉल स्पष्ट रूप से ईसाई धर्म में अपने रूपांतरण के ठीक बाद यरूशलेम की यात्रा का उल्लेख करता है और फिर अधिनियम 9-10 में ठीक उसी यात्रा का विवरण मिलता है। मुझे लगता है कि हर कोई इससे सहमत है।

समस्या यह है कि गलातियों 2 में यरूशलेम की यात्रा, यह किससे मेल खाती है? ल्यूक, जिसने अधिनियमों को लिखा था, अधिनियम 11 में स्पष्ट रूप से पॉल की यरूशलेम यात्रा का उल्लेख करता है, जहां पॉल वास्तव में यरूशलेम में अकाल राहत प्रयासों में मदद करने के लिए गया था। और फिर अधिनियम 15 आपकी यरूशलेम परिषद है। तो, सवाल यह है कि इसका ख्याल रखा जाता है।

हम गलातियों 1 से अधिनियम 9-10 तक एक सीधी रेखा खींच सकते हैं। वे दोनों समान या समान चिह्न हैं। वे दोनों एक ही यात्रा पर हैं।

लेकिन सवाल यह है कि जब पॉल गलातियों 2 में यरूशलेम की अपनी यात्रा के बारे में बात करता है, तो क्या यह प्रेरितों के काम 11, अकाल से राहत के लिए पॉल की यरूशलेम यात्रा, अकाल राहत प्रयास का उल्लेख करता है? या गलातियों 2 में पॉल यरूशलेम परिषद का जिक्र कर रहा है? अब आप देख सकते हैं कि जल्दी और देर कहाँ होती है। यदि गलातियों 2 अधिनियम 11, यात्रा, अकाल राहत यात्रा को संदर्भित करता है, तो गलातियों हमारे पास सबसे पहला पत्र है जो पॉल ने लिखा था। यदि गलातियों 2 अधिनियम 15, जेरूसलम परिषद को संदर्भित करता है, तो गलातियों को कुछ साल बाद लिखा गया है, और 1 थिस्सलुनिकियों पहला पत्र होगा जो पॉल ने लिखा था।

तो इसके पीछे मुद्दा यह है कि यह जल्दी है या देर से। फिर से, यह सब गलातियों 2 के चारों ओर घूमता है, फिर, गलातियों 1 और 2 एक तरह से पॉल के जीवन का सारांश है, जो यहूदी धर्म में उसके जीवन और उसके रूपांतरण के आसपास है। और प्रेरितों के काम 2 में, वह अपने धर्म परिवर्तन के कुछ वर्षों बाद, यरूशलेम की अपनी एक यात्रा का उल्लेख करता है।

और मुख्य बात यह है कि अधिनियमों में वह किस दौर का जिक्र कर रहा है? क्योंकि पॉल इसका विस्तार से वर्णन नहीं करता है। और आप क्या सोचते हैं कि यह किसका उल्लेख कर रहा है, यह इस बात पर प्रभाव डालेगा कि क्या आपको लगता है कि एक्ट्स पहला पुस्तक पत्र है जो हमारे

पास है जिसे पॉल ने लिखा है, यानी, यदि यह एक्ट्स में यात्रा का जिक्र कर रहा है, या यदि आपको लगता है कि गैलाटियन्स को थोड़ा बाद में लिखा गया था, और शायद 1 थिस्सलुनीकियों को पहले लिखा गया था, यही स्थिति होगी यदि गलातियों 2 अधिनियम 15 को संदर्भित करता है। क्योंकि जाहिर है, यदि यह अधिनियम 15 को संदर्भित करता है, तो उसके कुछ समय बाद तक गलातियों को नहीं लिखा जा सकता था, जो कि आधे रास्ते के निशान से काफी आगे था। पहली सदी.

लेकिन यदि यह अधिनियम 11 की बात कर रहा है, तो गलाटियन अधिनियम 15 के घटित होने से पहले ही लिखा गया होगा। इससे गैलाटियन्स थोड़ा पहले आ जाएंगे। जैसा कि आप जानते हैं, लेकिन फिर भी, मैं इसका बचाव नहीं करना चाहता, मेरी राय में, गलातियों अध्याय 2 अधिनियम 15, जेरूसलम परिषद का उल्लेख कर रहा है।

और किसी कारण से, पॉल ने इसका उल्लेख करना नहीं चुना। ऐसा क्यों हो सकता है, इसकी एक अलग व्याख्या है, लेकिन मुझे लगता है कि एक अच्छा मामला बनाया जा सकता है कि गलातियों 2 और अधिनियम 15 एक ही घटना का जिक्र कर रहे हैं, इसलिए मुझे लगता है कि शायद गलाटियन उससे थोड़ा बाद में थे, और 1 थिस्सलुनीकियों शायद लिखी गई पहली किताब थी, कम से कम हमारे पास पॉल के पत्रों का सबूत है। ठीक है, उत्तर और दक्षिण गलाटियन के मुद्दे पर कोई अन्य प्रश्न? पौलुस के पत्र की तिथि में गलातिया कहाँ थी? ठीक है, आप बिलकुल सही कह रहे हैं।

यह वास्तव में अल्पसंख्यक स्थिति है। मुझे नहीं पता कि मैं इसे क्यों लेता हूँ। लेकिन अधिकांश न्यू टेस्टामेंट, यदि आप पुस्तकालय में गए और अपनी पाठ्यपुस्तक के समान न्यू टेस्टामेंट सर्वेक्षणों या परिचयों का एक समूह देखा, तो आप पाएंगे कि उनमें से अधिकांश गैलाटियन्स 2 को अधिनियम 11 के साथ जोड़ देंगे, और फिर गैलाटियन्स को पहले स्थान पर रखेंगे। पत्र पॉल ने लिखा।

लेकिन फिर भी, मुझे अभी भी विश्वास है कि गलाटियन्स 2 अधिनियम 15 से बहुत मिलता जुलता है। और यदि आप दोनों वृत्तांतों को पढ़ते हैं, तो मेरा मतलब है कि वे स्पष्ट रूप से भिन्न होंगे क्योंकि एक्ट्स का लेखक इसे ठीक उसी तरह से रिकॉर्ड नहीं करने जा रहा है, जिस तरह से पॉल है, विशेष रूप से पॉल इसे अपनी पत्र-पत्रिका शैली के लिए बहुत संक्षिप्त करने जा रहा है। जो वह लिख रहे हैं। लेकिन एक बहुत अच्छा अवलोकन, आप देखेंगे कि मैंने एक्ट्स और गलाटियन्स 2 और एक्ट्स 15 की तारीख के बारे में जो कहा है वह आपकी पाठ्यपुस्तक के सुझाव के विपरीत है।

ठीक है, आइए इस बारे में थोड़ी बात करें कि पॉल ने सबसे पहले यह पत्र क्यों लिखा। गैलाटियन्स की पुस्तक, जब उद्देश्य की बात आती है या पॉल ने इसे क्यों लिखा है, तो मुझे लगता है कि यह उचित है, हालांकि कुछ विवरण आसान नहीं हो सकते हैं, यह बहुत व्यापक है, मुझे लगता है कि पुस्तक को पढ़ने से अनुमान लगाना काफी आसान है। गलातियों का। मैं अनुमान लगाता हूँ कि यदि हम सभी ने गलातियों की पुस्तक को पढ़ने के लिए समय निकाला, तो यदि आप इसे ध्यान से

पढ़ते हैं और इसके बारे में थोड़ा सोचते हैं, तो आप में से अधिकांश पॉल क्या करने की कोशिश कर रहे हैं, इसके बारे में काफी उचित सुझाव दे सकते हैं।

और वह यह है कि, ऐसा प्रतीत होता है कि पॉल रोमनों और प्रथम कुरिन्थियों में जो था उससे बहुत भिन्न स्थिति को संबोधित कर रहा है। अर्थात्, ऐसा लगता है कि पॉल एक ऐसी स्थिति को संबोधित कर रहे हैं जहां कुछ यहूदी ईसाई, और हम देखेंगे कि वे क्या कर रहे थे और वे इसे कैसे कर रहे थे, बस एक पल में, लेकिन कुछ यहूदी ईसाई वास्तव में पॉल के सुसमाचार को कमजोर कर रहे हैं। और यदि आपको याद हो, तो संक्षेप में कहें तो, पॉल का सुसमाचार यह है कि गैर-यहूदी, साथ ही यहूदी, गैर-यहूदी भी मोक्ष के आशीर्वाद में भाग ले सकते हैं और मूसा के कानून के प्रति समर्पित होने के अलावा भगवान के लोग बन सकते हैं।

इसलिए, अन्यजाति, जो पूरी तरह से मसीह में विश्वास पर आधारित हैं, मुक्ति के वादों में भाग ले सकते हैं और यहूदियों के साथ भगवान के सच्चे लोग बन सकते हैं, और वे मूसा के कानून के अधीन हुए बिना भी ऐसा कर सकते हैं। उस सुसमाचार को अब यहूदी ईसाइयों के एक समूह द्वारा चुनौती दी जा रही है जो सवाल उठा रहे हैं और जाहिर तौर पर पॉल के सुसमाचार को कमजोर करने की कोशिश कर रहे हैं। पॉल और विद्वान, विद्वान आम तौर पर गैलाटियन समूह को यहूदीवादियों के रूप में संदर्भित करते हैं, यानी, जो मूसा के कानून के तहत अन्यजातियों पर यहूदी जीवन शैली को लागू करने की कोशिश कर रहे हैं या करने की कोशिश कर रहे हैं।

शायद यह स्लाइड पॉल और यहूदीवादियों को कुछ हद तक समझा देगी। तो मूल रूप से, पॉल जिन यहूदियों को संबोधित कर रहा है, और मुझे लगता है, यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि वे ईसाई, ईसाई यहूदी प्रतीत होते हैं। वे कह रहे हैं कि वे इससे इनकार नहीं कर रहे थे, जाहिर तौर पर वे इस बात से इनकार नहीं कर रहे थे कि किसी को यीशु मसीह में विश्वास रखने की ज़रूरत है, लेकिन वे सुझाव दे रहे थे कि इसके लिए मूसा के कानून के अनुरूप होने की भी आवश्यकता है।

तो अन्यजातियों, हाँ, मसीह में विश्वास, लेकिन किसी को भी परमेश्वर के लोगों से संबंधित होने के संकेतक के रूप में मूसा के कानून के प्रति समर्पण करने की आवश्यकता थी। और इसके परिणामस्वरूप औचित्य या मुक्ति मिलती है, या हमने रोमनों में देखा, पॉल का मतलब औचित्य था, यह साबित करने के लिए एक कानूनी शब्द था, यह घोषित करने के लिए कि कोई दोषी नहीं है, यीशु मसीह में विश्वास करके किसी को दोषी ठहराना, साथ ही साथ लेना भी। पहचान चिह्नक और मोज़ेक कानून की जीवनशैली ही औचित्य लाती। मूल रूप से, हालांकि शायद थोड़ा बहुत सरल, पॉल, एक अर्थ में, इस सूत्र को फिर से बनाने जा रहा है और सुझाव देता है कि मसीह में विश्वास, मसीह में विश्वास वह है जो औचित्य लाता है, लेकिन औचित्य, हालांकि, स्पष्ट रूप से मसीह के प्रति आज्ञाकारिता के साथ जुड़ा हुआ है, जिसे पॉल पवित्र आत्मा से जोड़ने जा रहा है।

ध्यान दें कि उसने कानून हटा दिया है, उसने समीकरण से मूसा का कानून हटा दिया है। तो, यह विश्वास और मूसा की व्यवस्था नहीं है, यह विश्वास ही किसी को परमेश्वर के लोगों से संबंधित होने और दोषमुक्त होने के योग्य बनाता है, लेकिन यह आज्ञाकारिता के साथ है, जिसे पॉल नई वाचा

पवित्र आत्मा का श्रेय देता है। याद रखें हमने कहा था कि जब पवित्र आत्मा, यह अध्याय 2 है, परमेश्वर के लोगों पर, अधिनियमों की पुस्तक में, पिनतेकुस्त के दिन, जो नई वाचा का हिस्सा है।

जब परमेश्वर ने, पुराने नियम में, जब परमेश्वर ने वादा किया कि एक दिन वह एक नई वाचा स्थापित करेगा, तो उसका एक हिस्सा उसके लोगों पर आत्मा का उंडेला जाना था। अब, पॉल इसका श्रेय आज्ञाकारिता को देता है। जाहिर है, पॉल यह नहीं कहने जा रहा है कि हम इसे थोड़ी देर बाद देखेंगे जब हम गैलाटियन के अंत तक पहुंचेंगे।

यह पॉल के कहने का तरीका नहीं है; इसलिए, आपकी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है या आपको कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है। यह सब आपके जीवन में आत्मा का कार्य है। लेकिन स्पष्ट रूप से, पॉल आज्ञाकारिता को कानून के तहत जीवन जीने से नहीं, बल्कि नई वाचा की पवित्र आत्मा में भाग लेने से जोड़ता है जिसे भगवान ने अब अपने लोगों पर डाला है, जो यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से प्रवेश करते हैं।

तो, फिर से, आप देख सकते हैं कि कैसे पॉल ने सूत्र को उलट दिया है। ऐसा नहीं है कि हम किसी सूत्र का श्रेय यहूदी धर्म या यहां तक कि पॉल के दृष्टिकोण को देना चाहते हैं, लेकिन अगर हम इसे विस्तार से बता सकें, तो ऐसा लगता है कि पॉल इसी के खिलाफ लड़ रहा है और बहस कर रहा है और उसका समाधान इसे इस तरह से देखना है। अब, इस पत्र के बारे में एक दिलचस्प बात यह है कि आप यह देखना शुरू कर सकते हैं कि, हालांकि हम स्वीकार करते हैं कि नया नियम ईश्वर का वचन है, जो इन दस्तावेजों की मानवता को कभी कम नहीं करता है, कोई यह देख सकता है कि वे मनुष्यों द्वारा निर्मित किए गए थे लेखन और रचना के बहुत ही मानवीय साधन, और यहां तक कि व्यक्तिगत लेखकों के विशिष्ट स्वर और शैली और उनके लिखने के तरीके को भी प्रतिबिंबित करते हैं।

उदाहरण के लिए, जब आप गैलाटियन्स को पढ़ना शुरू करते हैं, तो आपको रोमनों की तुलना में पॉल की एक बहुत अलग तस्वीर मिलती है। रोमनों में, पॉल थोड़ा अधिक प्रतीत होता है, मुझे यकीन नहीं है कि क्या मैं वास्तव में पत्र का मनोवैज्ञानिकीकरण करना चाहता हूं, लेकिन साथ ही, ऐसा प्रतीत होता है कि जिस तरह से वह प्रस्तुत करता है, पॉल थोड़ा अधिक आरक्षित या अधिक गणनात्मक लगता है। स्वयं, गलाटियन्स, आपको यह समझ में आता है कि पॉल वास्तव में किनारे पर है और उसका स्वर थोड़ा अधिक कठोर और कठोर है और आपको यह समझ में आता है कि वह वास्तव में उस स्थिति से परेशान है जिसका वह अब सामना कर रहा है। तो, ध्यान दें, परिचय के बाद, जिसके बारे में हमने कहा था कि गैलाटियन्स पहली सदी के किसी भी पत्र की तरह शुरू होता है।

पॉल, स्वयं की पहचान करता है, भले ही वह उस पर थोड़ा विस्तार से बताता है, और फिर वह अपने पाठकों को गलाटियंस के रूप में पहचानता है। बस इसी तरह आप पहली सदी के पत्र की शुरुआत करते हैं। पॉल कुछ भी असामान्य नहीं कर रहा है।

हालाँकि, जो असामान्य है वह गलातियों में है, जब आप गलातियों की तुलना नए नियम में पॉल द्वारा लिखे गए अन्य सभी पत्रों से करते हैं, तो इसमें कुछ ऐसा गायब है जो आपको अन्य सभी

पत्रों में मिलता है और जो पहली शताब्दी के किसी भी पत्र में पाया जाता, और वह धन्यवाद था। पॉल के सभी पत्र इस प्रकार शुरू होते हैं, मैं आपके कारण अपने प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से अपने ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ, और वह अपने पाठकों द्वारा किए गए किसी काम के कारण या अपने पाठकों के जीवन में किसी चीज के कारण ईश्वर को धन्यवाद देगा। पहली सदी के धर्मनिरपेक्ष पत्रों में, अधिकांश लोगों ने देवताओं, रोमन देवताओं, या पाठकों के लिए ऐसा कुछ धन्यवाद दिया होगा या उनके अच्छे स्वास्थ्य या ऐसा कुछ के लिए उन्हें धन्यवाद दिया होगा, लेकिन पॉल आमतौर पर पाठकों को उनके द्वारा किए गए कार्यों के लिए धन्यवाद देते हैं। या सुसमाचार में उनकी प्रगति के कारण।

लेकिन गलातियों को धन्यवाद ज्ञापन की याद आ रही है। फिर, पॉल के पत्रों में यह अजीब है, लेकिन कभी-कभी पहली सदी के पत्रों में भी यह उतना ही अजीब होता। इसके बजाय, ध्यान दें कि अध्याय 1 और श्लोक 6 कैसे शुरू होते हैं।

परिचय के ठीक बाद, पॉल कहते हैं, मुझे आश्चर्य है कि आप इतनी जल्दी उसे त्याग रहे हैं जिसने आपको मसीह की कृपा में बुलाया और एक अलग सुसमाचार की ओर मुड़ रहे हैं। ऐसा नहीं है कि कोई और सुसमाचार है, परन्तु कुछ ऐसे हैं जो तुम्हें भ्रमित कर रहे हैं और मसीह के सुसमाचार को विकृत करना चाहते हैं। परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत तुम्हें हमारे सुसमाचार के विपरीत कोई और सुसमाचार सुनाए, तो वह शापित हो।

फिर, यह सशक्त भाषा है। फिर, वह धन्यवाद ज्ञापन को छोड़ देता है और कहता है, मुझे आश्चर्य है कि इतना समय मैंने आपको सुसमाचार का प्रचार करने में बिताया है, मुझे आश्चर्य है कि आप इतनी जल्दी किसी ऐसी चीज़ से भटक जायेंगे जो स्पष्ट रूप से सुसमाचार से भिन्न है। अध्याय 6 और श्लोक 11, ध्यान दें कि वह पत्र को कैसे समाप्त करता है।

अध्याय 6 और श्लोक 11 में वह कहते हैं, देखो जब मैं अपने हाथ से लिखता हूँ तो कितने बड़े अक्षर बनाता हूँ। अब, याद रखें कि हमने रोमनों के साथ कहा था, याद रखें कि हमने कहा था कि पॉल, पहली शताब्दी के पत्र लेखक की काफी विशिष्ट परंपरा का पालन करते हुए, पॉल ने एक अमानुएंसिस या एक सचिव की सेवाओं को नियोजित किया होगा जो संभवतः उसके पत्र को निर्देशित करेगा। को। यह शायद गलातियों के साथ सच था।

परन्तु अब ऐसा प्रतीत होता है कि पॉल कलम उठाता है और कहता है, देखो जब मैं अपने हाथ से लिखता हूँ तो कितने बड़े अक्षर बनाता हूँ। कुछ लोगों ने कहा है, ठीक है, यह पॉल के कारण है, वे इसे शरीर के कांटे से जोड़ते हैं। 2 कुरिन्थियों में, उन्होंने कहा कि शरीर में कांटा पॉल की खराब दृष्टि के कारण था, इसलिए उसे बड़े अक्षरों में लिखना पड़ा क्योंकि वह देख नहीं सकता था।

नहीं, मुझे लगता है कि यह बालोनी है। मुझे लगता है कि यह पॉल के गुस्से और उसकी परेशानी और आश्चर्य का संकेत है। वह ध्यान आकर्षित करने की कोशिश कर रहा है।

अब वह कह रहा है, अगर मैं व्याख्या कर सकूँ, तो ऐसा लगता है मानो वह कह रहा हो, अब मैं कलम उठाऊंगा और इस पत्र को समाप्त करूंगा। देखो मैं कितने बड़े अक्षर लिखता हूँ। दूसरे

शब्दों में, आप इस पर ध्यान देते हैं क्योंकि मैं इस बात से आश्चर्यचकित हूँ कि आपने कैसे प्रतिक्रिया दी और इतनी जल्दी इस सुसमाचार से दूर हो गए।

इसलिए, गलातियों में, हम पॉल की ओर से एक बहुत अलग स्वर देखते हैं। हमें ऐसा कोई पत्र नहीं दिख रहा है जो मुख्य रूप से उत्साहवर्धक हो और वह अपने पाठकों की अधिक प्रशंसा न करता हो। इसके बजाय, यह एक ऐसा पत्र होने जा रहा है जहां पॉल स्पष्ट रूप से हताशा और निराशा से बाहर लिख रहा है और पाठक क्या कर रहे हैं इस पर आश्चर्य कर रहा है और अब उन्हें इन यहूदीवादियों द्वारा गुमराह न होने के लिए मनाने की कोशिश करेगा जो अन्यजातियों को मजबूर करने की कोशिश कर रहे हैं मूसा के कानून और यहूदी धर्म के तहत जीवन के प्रति समर्पण करें और उन्हें यह दिखाने का प्रयास करें कि पुराने नियम का कानून अब कोई भूमिका नहीं निभाता है।

धर्मी घोषित होने, दोषमुक्त होने, न्यायसंगत होने और ईश्वर के सच्चे लोगों से संबंधित होने के लिए यीशु मसीह में विश्वास प्राथमिक आवश्यकता है। तो, हम देखेंगे कि पॉल किस प्रकार इस पर तर्क करता है और अपने पत्र में ऐसा करता है। वसंत ऋतु की अच्छी छुट्टियाँ हों।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा अपने न्यू टेस्टामेंट इतिहास और साहित्य पाठ्यक्रम में 2 कुरिन्थियों और गलातियों पर व्याख्यान 18 था।